



Bela verma

20 May 1986

06:18 PM

Barkagaon

Model: Web-MyKundli

Order No: 121506001

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 20/05/1986  
दिन \_\_\_\_\_: मंगलवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 18:18:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 32:58:36 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Barkagaon  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 25:27:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 84:08:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:06:32 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 18:24:32 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:03:33 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 10:16:04 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 05:06:33 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:33:42 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 13:27:08 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: ग्रीष्म  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 05:32:52 वृष  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 02:59:54 वृश्चिक

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: वृश्चिक - मंगल  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: कन्या - बुध  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: हस्त - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: चन्द्र  
योग \_\_\_\_\_: सिद्धि  
करण \_\_\_\_\_: बव  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: महिष  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: वैश्य  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: श्वान  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: भूमि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: ण--  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: स्वर्ण - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: वृष

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1908	वैशाख	30
पंजाबी	संवत : 2043	ज्येष्ठ	7
बंगाली	सन् : 1393	ज्येष्ठ	5
तमिल	संवत : 2043	वैकासी	6
केरल	कोल्लम : 1161	इदवम	6
नेपाली	संवत : 2043	ज्येष्ठ	6
चैत्रादि	संवत : 2043	वैशाख	शुक्ल 11
कार्तिकादि	संवत : 2043	वैशाख	शुक्ल 11

### पंचांग

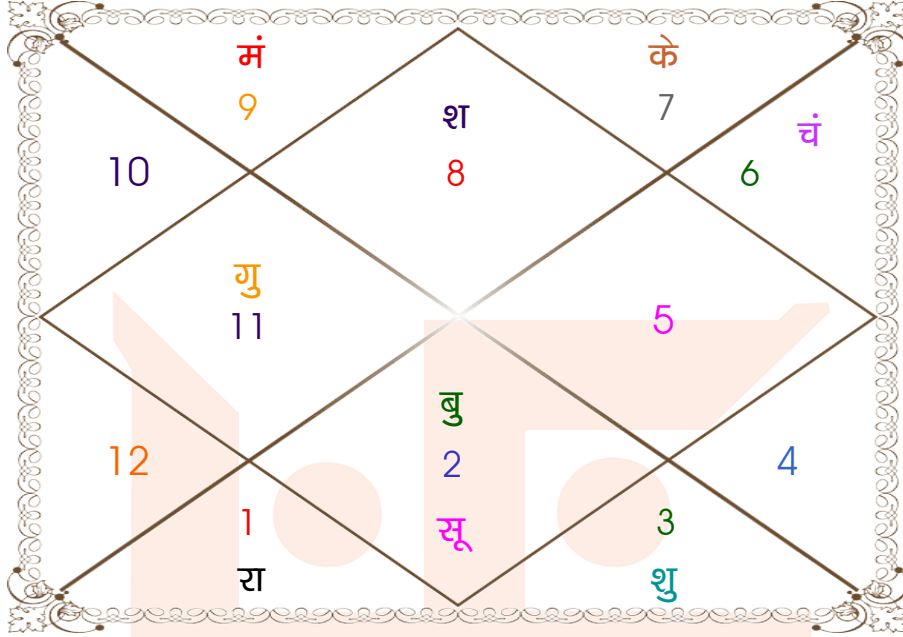
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 11  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 15:10:13  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 12  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : हस्त  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 25:06:10 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : हस्त  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : वज्र  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 10:39:10 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : सिद्धि  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 15:10:13 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : बव  
भयात \_\_\_\_\_ : 39:28:05  
भभोग \_\_\_\_\_ : 56:28:30  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : चंद्र 3 वर्ष 0 मा 15 दि

### घात चक्र

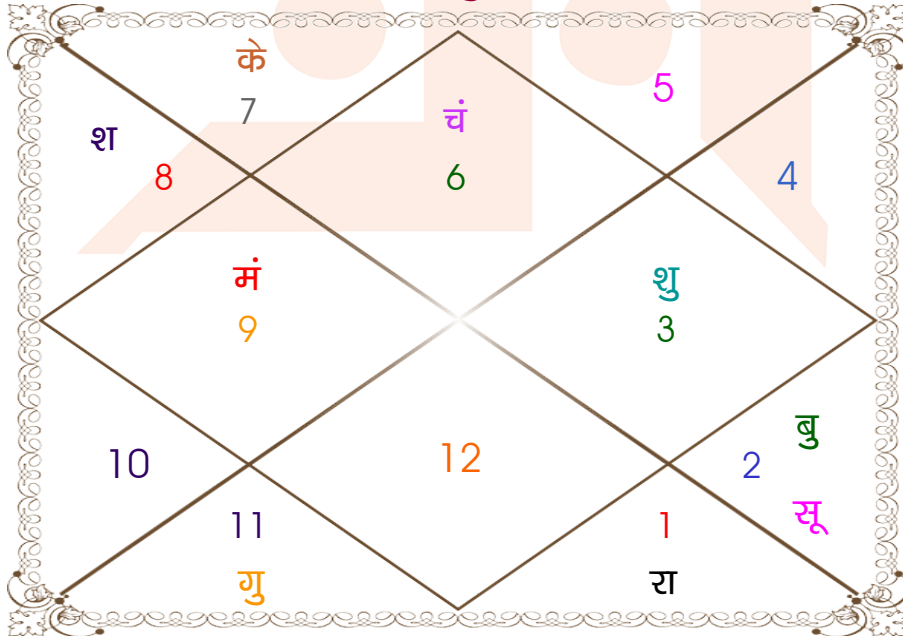
मास \_\_\_\_\_ : भाद्रपद  
तिथि \_\_\_\_\_ : 5-10-15  
दिन \_\_\_\_\_ : शनिवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : श्रवण  
योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मेष  
लग्न \_\_\_\_\_ : मीन  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मेष  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
मंगल \_\_\_\_\_ : वृष  
बुध \_\_\_\_\_ : मीन  
गुरु \_\_\_\_\_ : मिथुन  
शुक्र \_\_\_\_\_ : कर्क  
शनि \_\_\_\_\_ : मीन  
राहु \_\_\_\_\_ : सिंह

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

	रा	बु सू	शु
गु			
मं	श ल	के	चं

### लग्न कुंडली

बु सू	रा	
शु		गु
चं	के	मं ल श

विंशोत्तरी  
चन्द्र 3वर्ष 0मा 15दि  
चन्द्र

20/05/1986

05/06/2099

चन्द्र	05/06/1989
मंगल	04/06/1996
राहु	05/06/2014
गुरु	05/06/2030
शनि	05/06/2049
बुध	05/06/2066
केतु	05/06/2073
शुक्र	05/06/2093
सूर्य	05/06/2099

योगिनी  
संकटा 2वर्ष 5मा 6दि  
पिंगला

26/10/2025

26/10/2027

पिंगला	05/12/2025
धान्या	04/02/2026
भामरी	26/04/2026
भद्रिका	06/08/2026
उल्का	05/12/2026
सिद्धा	26/04/2027
संकटा	06/10/2027
मंगला	26/10/2027

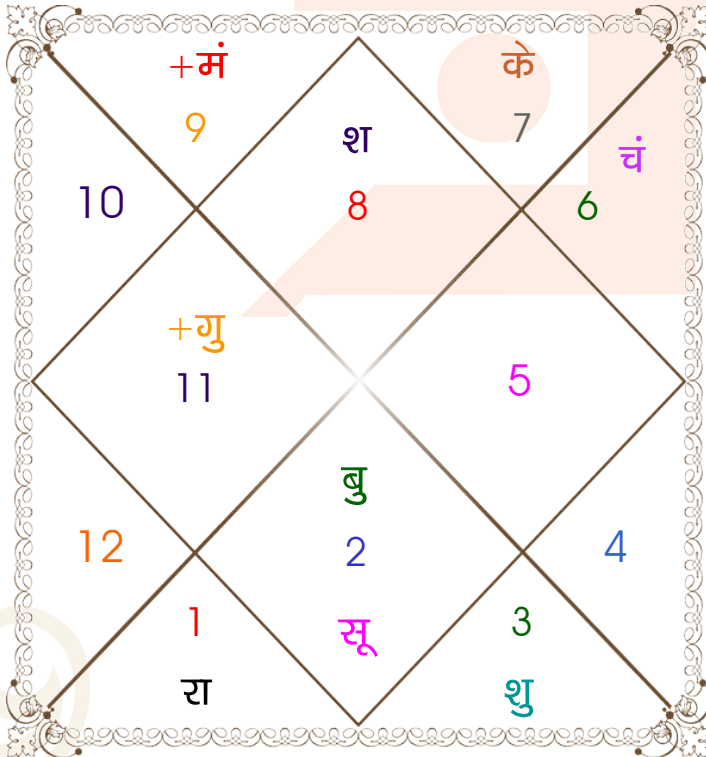
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	02:59:54	311:56:20	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
सूर्य			वृष	05:32:52	00:57:43	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
चंद्र			कन्या	19:16:36	14:14:59	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	मित्र राशि
मंगल			धनु	27:13:42	00:13:01	उत्तराषाढा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	मित्र राशि
बुध	अ		वृष	02:27:52	02:10:04	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	मित्र राशि
गुरु			कुंभ	24:57:33	00:08:54	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	सम राशि
शुक्र			मिथु	05:05:08	01:12:08	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	सूर्य	मित्र राशि
शनि	व		वृश्चि	13:18:10	00:04:24	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	राहु	शत्रु राशि
राहु			मेष	06:04:11	00:00:54	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	राहु	शत्रु राशि
केतु			तुला	06:04:11	00:00:54	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	सम राशि
हर्ष	व		वृश्चि	27:35:26	00:02:13	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	---
नेप	व		धनु	11:40:40	00:01:13	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
प्लूटो	व		तुला	11:39:18	00:01:31	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	---
दशम भाव			सिंह	08:21:19	--	मघा	--	10	सूर्य	केतु	गुरु	--

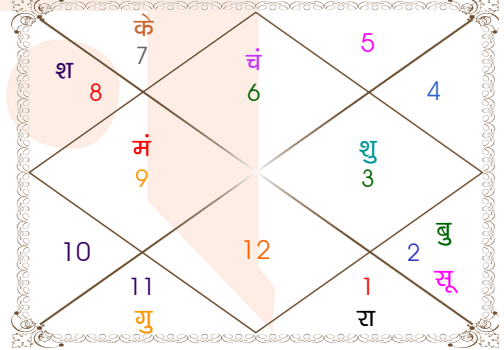
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:51

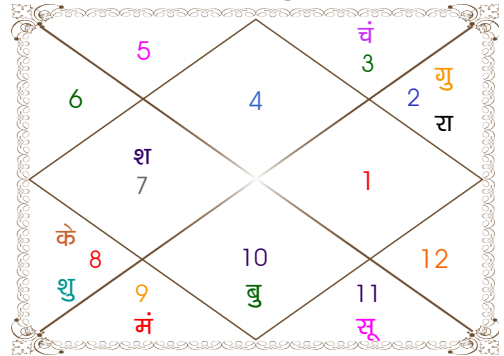
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 18:53:28	वृश्चिक 02:59:54
2	वृश्चिक 18:53:28	धनु 04:47:02
3	धनु 20:40:36	मकर 06:34:10
4	मकर 22:27:45	कुम्भ 08:21:19
5	कुम्भ 22:27:45	मीन 06:34:10
6	मीन 20:40:36	मेष 04:47:02
7	मेष 18:53:28	वृष 02:59:54
8	वृष 18:53:28	मिथुन 04:47:02
9	मिथुन 20:40:36	कर्क 06:34:10
10	कर्क 22:27:45	सिंह 08:21:19
11	सिंह 22:27:45	कन्या 06:34:10
12	कन्या 20:40:36	तुला 04:47:02

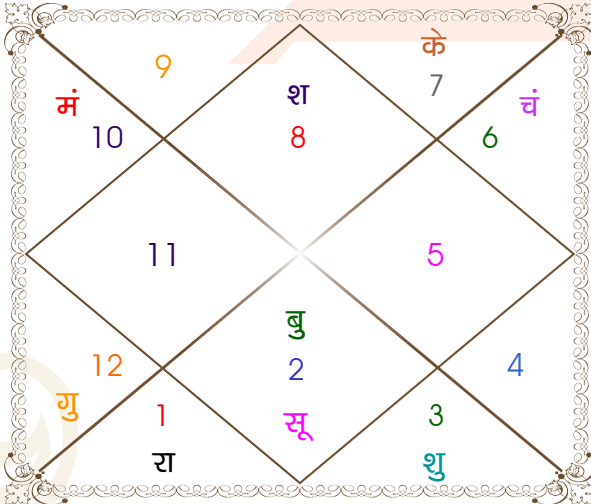
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	02:59:54
2	धनु	02:45:03
3	मकर	04:49:23
4	कुम्भ	08:21:19
5	मीन	10:25:44
6	मेष	08:34:45
7	वृष	02:59:54
8	मिथुन	02:45:03
9	कर्क	04:49:23
10	सिंह	08:21:19
11	कन्या	10:25:44
12	तुला	08:34:45

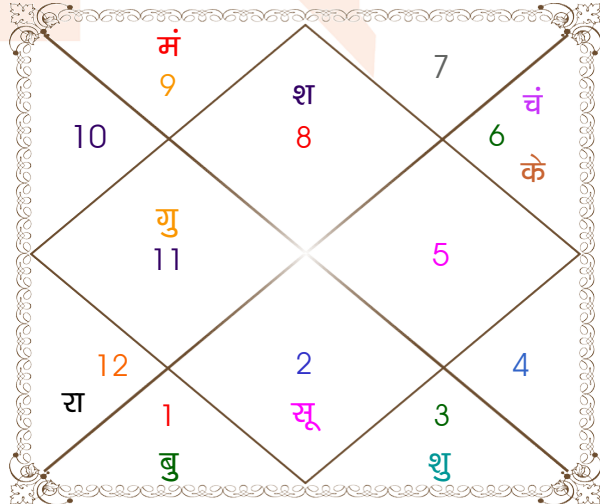
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 3 वर्ष 0 मास 15 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
20/05/1986	05/06/1989	04/06/1996	05/06/2014	05/06/2030
05/06/1989	04/06/1996	05/06/2014	05/06/2030	05/06/2049
00/00/0000	मंगल 01/11/1989	राहु 15/02/1999	गुरु 23/07/2016	शनि 08/06/2033
00/00/0000	राहु 19/11/1990	गुरु 11/07/2001	शनि 03/02/2019	बुध 16/02/2036
00/00/0000	गुरु 26/10/1991	शनि 17/05/2004	बुध 11/05/2021	केतु 27/03/2037
00/00/0000	शनि 04/12/1992	बुध 04/12/2006	केतु 17/04/2022	शुक्र 26/05/2040
20/05/1986	बुध 01/12/1993	केतु 23/12/2007	शुक्र 16/12/2024	सूर्य 08/05/2041
बुध 04/09/1986	केतु 29/04/1994	शुक्र 23/12/2010	सूर्य 04/10/2025	चंद्र 07/12/2042
केतु 05/04/1987	शुक्र 29/06/1995	सूर्य 16/11/2011	चंद्र 03/02/2027	मंगल 16/01/2044
शुक्र 04/12/1988	सूर्य 04/11/1995	चंद्र 17/05/2013	मंगल 10/01/2028	राहु 22/11/2046
सूर्य 05/06/1989	चंद्र 04/06/1996	मंगल 05/06/2014	राहु 05/06/2030	गुरु 05/06/2049

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
05/06/2049	05/06/2066	05/06/2073	05/06/2093	05/06/2099
05/06/2066	05/06/2073	05/06/2093	05/06/2099	00/00/0000
बुध 01/11/2051	केतु 01/11/2066	शुक्र 04/10/2076	सूर्य 22/09/2093	चंद्र 05/04/2100
केतु 28/10/2052	शुक्र 01/01/2068	सूर्य 04/10/2077	चंद्र 24/03/2094	मंगल 04/11/2100
शुक्र 29/08/2055	सूर्य 08/05/2068	चंद्र 05/06/2079	मंगल 30/07/2094	राहु 06/05/2102
सूर्य 05/07/2056	चंद्र 07/12/2068	मंगल 04/08/2080	राहु 23/06/2095	गुरु 05/09/2103
चंद्र 04/12/2057	मंगल 05/05/2069	राहु 05/08/2083	गुरु 10/04/2096	शनि 06/04/2105
मंगल 01/12/2058	राहु 24/05/2070	गुरु 05/04/2086	शनि 23/03/2097	बुध 21/05/2106
राहु 20/06/2061	गुरु 29/04/2071	शनि 05/06/2089	बुध 28/01/2098	00/00/0000
गुरु 26/09/2063	शनि 07/06/2072	बुध 04/04/2092	केतु 05/06/2098	00/00/0000
शनि 05/06/2066	बुध 05/06/2073	केतु 05/06/2093	शुक्र 05/06/2099	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 3 वर्ष 0 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>गुरु - चंद्र</b>	<b>गुरु - मंगल</b>	<b>गुरु - राहु</b>	<b>शनि - शनि</b>	<b>शनि - बुध</b>
<b>04/10/2025</b>	<b>03/02/2027</b>	<b>10/01/2028</b>	<b>05/06/2030</b>	<b>08/06/2033</b>
<b>03/02/2027</b>	<b>10/01/2028</b>	<b>05/06/2030</b>	<b>08/06/2033</b>	<b>16/02/2036</b>
चंद्र 14/11/2025	मंगल 23/02/2027	राहु 21/05/2028	शनि 26/11/2030	बुध 25/10/2033
मंगल 12/12/2025	राहु 15/04/2027	गुरु 15/09/2028	बुध 30/04/2031	केतु 21/12/2033
राहु 23/02/2026	गुरु 31/05/2027	शनि 31/01/2029	केतु 04/07/2031	शुक्र 03/06/2034
गुरु 29/04/2026	शनि 24/07/2027	बुध 05/06/2029	शुक्र 03/01/2032	सूर्य 22/07/2034
शनि 15/07/2026	बुध 10/09/2027	केतु 26/07/2029	सूर्य 27/02/2032	चंद्र 12/10/2034
बुध 22/09/2026	केतु 30/09/2027	शुक्र 19/12/2029	चंद्र 28/05/2032	मंगल 08/12/2034
केतु 21/10/2026	शुक्र 26/11/2027	सूर्य 01/02/2030	मंगल 31/07/2032	राहु 05/05/2035
शुक्र 10/01/2027	सूर्य 13/12/2027	चंद्र 15/04/2030	राहु 12/01/2033	गुरु 13/09/2035
सूर्य 03/02/2027	चंद्र 10/01/2028	मंगल 05/06/2030	गुरु 08/06/2033	शनि 16/02/2036
<b>शनि - केतु</b>	<b>शनि - शुक्र</b>	<b>शनि - सूर्य</b>	<b>शनि - चंद्र</b>	<b>शनि - मंगल</b>
<b>16/02/2036</b>	<b>27/03/2037</b>	<b>26/05/2040</b>	<b>08/05/2041</b>	<b>07/12/2042</b>
<b>27/03/2037</b>	<b>26/05/2040</b>	<b>08/05/2041</b>	<b>07/12/2042</b>	<b>16/01/2044</b>
केतु 10/03/2036	शुक्र 05/10/2037	सूर्य 12/06/2040	चंद्र 25/06/2041	मंगल 31/12/2042
शुक्र 17/05/2036	सूर्य 02/12/2037	चंद्र 11/07/2040	मंगल 29/07/2041	राहु 02/03/2043
सूर्य 06/06/2036	चंद्र 09/03/2038	मंगल 01/08/2040	राहु 24/10/2041	गुरु 25/04/2043
चंद्र 10/07/2036	मंगल 15/05/2038	राहु 22/09/2040	गुरु 09/01/2042	शनि 28/06/2043
मंगल 02/08/2036	राहु 04/11/2038	गुरु 07/11/2040	शनि 10/04/2042	बुध 24/08/2043
राहु 02/10/2036	गुरु 08/04/2039	शनि 01/01/2041	बुध 01/07/2042	केतु 17/09/2043
गुरु 25/11/2036	शनि 08/10/2039	बुध 19/02/2041	केतु 04/08/2042	शुक्र 23/11/2043
शनि 28/01/2037	बुध 20/03/2040	केतु 11/03/2041	शुक्र 09/11/2042	सूर्य 14/12/2043
बुध 27/03/2037	केतु 26/05/2040	शुक्र 08/05/2041	सूर्य 07/12/2042	चंद्र 16/01/2044
<b>शनि - राहु</b>	<b>शनि - गुरु</b>	<b>बुध - बुध</b>	<b>बुध - केतु</b>	<b>बुध - शुक्र</b>
<b>16/01/2044</b>	<b>22/11/2046</b>	<b>05/06/2049</b>	<b>01/11/2051</b>	<b>28/10/2052</b>
<b>22/11/2046</b>	<b>05/06/2049</b>	<b>01/11/2051</b>	<b>28/10/2052</b>	<b>29/08/2055</b>
राहु 20/06/2044	गुरु 26/03/2047	बुध 07/10/2049	केतु 22/11/2051	शुक्र 19/04/2053
गुरु 06/11/2044	शनि 19/08/2047	केतु 27/11/2049	शुक्र 22/01/2052	सूर्य 10/06/2053
शनि 20/04/2045	बुध 28/12/2047	शुक्र 23/04/2050	सूर्य 09/02/2052	चंद्र 04/09/2053
बुध 14/09/2045	केतु 20/02/2048	सूर्य 06/06/2050	चंद्र 10/03/2052	मंगल 03/11/2053
केतु 14/11/2045	शुक्र 23/07/2048	चंद्र 18/08/2050	मंगल 31/03/2052	राहु 07/04/2054
शुक्र 07/05/2046	सूर्य 08/09/2048	मंगल 09/10/2050	राहु 24/05/2052	गुरु 23/08/2054
सूर्य 28/06/2046	चंद्र 24/11/2048	राहु 18/02/2051	गुरु 12/07/2052	शनि 03/02/2055
चंद्र 22/09/2046	मंगल 17/01/2049	गुरु 15/06/2051	शनि 07/09/2052	बुध 30/06/2055
मंगल 22/11/2046	राहु 05/06/2049	शनि 01/11/2051	बुध 28/10/2052	केतु 29/08/2055

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

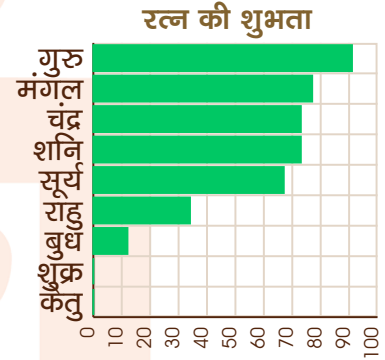
मूलांक	2
भाग्यांक	4
मित्र अंक	2, 7, 8, 4
शत्रु अंक	5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	91%	सुख, धन, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	77%	धन, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	73%	धनार्जन, भाग्योदय
नीलम	शनि	73%	स्वास्थ्य, पराक्रम, सुख
माणिक्य	सूर्य	67%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	34%	शत्रु व रोग, धन हानि
पन्ना	बुध	12%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट, व्यय
लहसुनिया	केतु	0%	व्यय, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	05/06/1989	73%	86%	77%	25%	91%	0%	73%	9%	0%
मंगल	04/06/1996	73%	80%	89%	0%	97%	0%	73%	9%	3%
राहु	05/06/2014	55%	61%	64%	12%	91%	0%	80%	55%	0%
गुरु	05/06/2030	73%	80%	83%	0%	100%	0%	73%	34%	0%
शनि	05/06/2049	55%	61%	64%	25%	91%	0%	86%	47%	0%
बुध	05/06/2066	73%	61%	77%	38%	91%	0%	73%	34%	0%
केतु	05/06/2073	55%	61%	83%	12%	91%	0%	61%	9%	16%
शुक्र	05/06/2093	55%	61%	77%	25%	91%	0%	80%	47%	3%
सूर्य	05/06/2099	80%	80%	83%	12%	97%	0%	61%	9%	0%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	धन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	कम खर्च

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति चन्द्र कुंडली से चतुर्थ भाव में है। अतः आप मांगलिक कन्या हैं। लेकिन शास्त्र के नियमानुसार आपका मंगली दोष समाप्त हो जाता है। इसलिए यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपकी शारीरिक स्वस्थता बनी रहेगी। साथ ही जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों से सुसम्पन्न रहकर जीवन में प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पति का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आपके आपसी सम्बंध भी मधुर रहेंगे जिससे दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा।

ऐसे मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है परन्तु इससे किसी भी प्रकार की हानि नहीं होगी तथा विवाह कार्य शान्ति पूर्वक सम्पन्न हो जाएगा एवं इसमें आपको किसी भी प्रकार से व्यवधान या समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के पश्चात पति से आपको पूर्ण प्रेम तथा सहयोग प्राप्त होगा साथ ही उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा क्रोध के भाव की प्रबलता दृष्टिगोचर होगी।

चन्द्रकुंडली से चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के प्रभाव से आप आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त होकर उनका उपभोग करेंगी। साथ ही चल या अचल सम्पत्ति की भी स्वामिनी रहेंगी। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप सुयोग्य एवं स्वस्थ पुरुष को पति के रूप में प्राप्त करेंगी तथा परस्पर पूर्ण सहयोग एवं प्रेम पूर्वक दाम्पत्य सुख का आनंद प्राप्त करेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप का कार्य क्षेत्र सुदृढ़ होगा तथा किसी सम्मानीय पद को प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी एवं समाज में पूर्ण मान प्रतिष्ठा तथा यश भी अर्जित करेंगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के द्वारा आपके आय साधनों में नित्य वृद्धि होती रहेगी। जिसके कारण आप धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। इस प्रकार आप

सभी आवश्यक सुखों से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनंदमय बनाने के लिए किसी गैर मांगलिक या ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह सम्पन्न करना चाहिए जिसका उचित नियमानुसार मांगलिक दोष भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप विवाह करेंगी तो सौभाग्य से युक्त होकर आप जीवन में समस्त सुखों, धन धान्य वैभव एवं कीर्ति प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। आपके पति के साथ प्रेम पूर्ण संबंध तथा सहयोग का भाव रहेगा जिससे दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्या या व्यवधान उत्पन्न नहीं होंगे।

इसके अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि जिस युवक की कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में ही स्थित हो उससे यदि आवश्यक न हो तो विवाह न करें क्योंकि समान भावों से मंगल रहने से जीवन में आपके पास आवश्यक सुख संसाधनों का अभाव हो सकता है या इन्हें प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा जिससे मन में अशान्ति उत्पन्न होगी। अतः इसका प्रभाव आपके दाम्पत्य जीवन पर अवश्य पड़ेगा जिससे आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। इसके अलावा अन्य भावों में मंगल की स्थिति हो तो वह शुभ फलदायक होगी तथा जीवन में अनावश्यक कष्ट या परेशानियां नहीं रहेंगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन शान्त एवं सुखी रहेगा। अतः सोच विचारकर एवं सावधानी पूर्वक अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे भविष्य में दाम्पत्य जीवन निर्विघ्न रूप से व्यतीत हो सके।

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

### **नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रुचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

### चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

## मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी कार्यों में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

## बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

वृष राशि में बुध हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, उच्चपद पर आसीन, सुगठित शरीर, दिखावा पसन्द करने वाला, शास्त्रज्ञ, व्यायामप्रिय, धनवान्, गम्भीर, मधुरभाषी, विलासी एवं रतिशास्त्रज्ञ होता है।

## गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

## शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी,

पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

### शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरध्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

### राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

### केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ढग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ढगने वाला होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु  
( 05/06/2014 - 05/06/2030 )

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 05/06/2014 को आरम्भ और 05/06/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है और मातृभूमि, माता, निजी मामले, गुप्त जीवन, खेती, बगान पैतृक सम्पत्ति, शिक्षा-वृत्ति, जल, तालाब, दूध, नदी और झील के द्योतक इस भाव को बली कर रहा है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है। चौथे भाव में स्थित इस ग्रह की आपकी जन्मकुण्डली के आठवें, दसवें और बारहवें भावों पर दृष्टि है और यह इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए अनुकूल, सुख तथा समृद्धिदायक होगी।

स्वास्थ्य :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु चतुर्थ भाव को बली कर रहा है। आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा और कोई गम्भीर बीमारी या कष्ट नहीं होगा। आप अपना कार्य सामान्य ढंग से पूरा करेंगे।

धन-सम्पत्ति :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (बारहवें भाव के अतिरिक्त) आठवें और 'मंगलीय कार्य' तथा व्यवसाय के दसवें भाव पर है। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति में वृद्धि करने के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। आप नयी गाड़ियाँ तथा नया मकान खरीद सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

व्यवसाय :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (12वें भाव के अतिरिक्त) 8वें तथा व्यवसाय, दीर्घायु और 'सुखकार्य' के 10वें भाव पर है, अतः आप अपने व्यवसाय में सफल होंगे, कार्यक्षेत्र में आगे रहेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, आपको अपनी व्यावसायिक वृत्ति में प्रगति के अच्छे अवसर मिलेंगे। आपके कार्य की आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चतुर्थ भाव अर्थात् माता, जन्म और 'सुखस्थान' के भाव में स्थित गुरु के कारण इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे। फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण रहेगा। परिवार में समरसता लाने में आपकी माता की भूमिका अहम होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

चतुर्थ भाव, जो शिक्षा का भाव भी है, में स्थित गुरु के कारण आपकी शिक्षा उत्तम

होगी और आप सफल होंगे ।



**अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र  
( 04/10/2025 - 03/02/2027 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 05/06/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 04/10/2025 को आरंभ होकर 03/02/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी लाभकारी दूरस्थ स्थान की यात्रा होगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे। धनागम सरलता से होगा। संतान से सुख मिलेगा। बहुत से मित्र होंगे। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर होंगे, वे धनी बनेंगे। आपकी कला और खेलकूद में रुचि होगी। धर्म और अध्यात्म में दिलचस्पी हो सकती है। जनता की भलाई के कार्य करेंगे।

आपके जीवनसाथी को सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है।

आपके पिता के स्पर्धियों की संख्या में कमी आएगी, वे कला में रुचि लेंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं, अचानक लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, माता-पिता से लाभ, आत्म-विश्वास में वृद्धि, सुख-सुविधाओं और उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधा संपन्न होगा। परामर्शदाताओं के लाभ में वृद्धि होगी। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। कानों और शरीर के निचले अंगों की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरवजी की उपासना दूध से करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - मंगल  
( 03/02/2027 - 10/01/2028 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 05/06/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/02/2027 को प्रारंभ होकर वद 10/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको धनलाभ उत्तम होगा, मगर व्यर्थ के खर्चों से बचना श्रेयस्कर रहेगा। आपकी बुद्धि और कल्पनाशक्ति उत्तम रहेंगी। प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। परिवार में कटुता से बचाव करें। आपकी कार्यक्षमता उत्तम रहेगी, साझेदार के माध्यम से या विरासत द्वारा धनागम हो सकता है। अप्रत्याशित घटना या परिवर्तन संभव है। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। सट्टेबाजी से लाभ, प्रोन्नति, परीक्षा में सफलता और उच्चाधिकारियों से लाभ की संभावना है।



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

**महादशा :- शनि**  
**( 05/06/2030 - 05/06/2049 )**

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 05/06/2030 को आरम्भ और 05/06/2049 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रथम भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो जातक के दिमाग में भय उत्पन्न करता है। लक्ष्य प्राप्ति में यह बाधा और विलम्ब करता है। यह जातक की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि तृतीय, सप्तम तथा दशम भाव पर है और यह इन भावों के 'कारकत्व' पर प्रभाव डाल रहा है। प्रथम भाव, जिसमें यह स्थित है, शरीर की लम्बाई, बनावट, स्वास्थ्य, जीवन-शक्ति, व्यक्तित्व, जीवन संघर्ष, प्रतिष्ठा, सामान्य तन्दुरुस्ती, और जीवन-संरचना के प्रति विचार का द्योतक है।

**स्वास्थ्य :**

महादशा स्वामी शनि लग्न में स्थित होने के फलस्वरूप इस दशा के दौरान कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना नहीं होगी। इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा और आप अपना कार्य नियमित रूप से करेंगे।

**अर्थ-सम्पत्ति :**

इस दशा के दौरान शनि के कारण आपको अर्थ-सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। आपको धन अर्जन के अनेक अवसर मिलेंगे और इस दशा में आपके संसाधनों में वृद्धि और 'सुधार' होगा। आप आराम और विलास की वस्तुओं पर व्यय करने में सक्षम होंगे।

**व्यवसाय :**

व्यावसायिक स्तर पर आप सुदृढ़ होंगे और अपनी बुद्धिमत्ता तथा शिक्षा के बल पर स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपमें स्वनियोजित होने की संभावना है। आप उपदेशक या नेता भी हो सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति भी मिल सकती है।

**पारिवारिक जीवन :**

प्रथम भाव से सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि के फलस्वरूप आपको आपके जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा और वह आपके परिवार को सुचारु रूप से चलाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी तथा सहयोगी होंगे और आपके दैनिक जीवन में आपका सहयोग करेंगे। आपको उनसे संतोष मिलेगा।

**शिक्षा/प्रशिक्षण :**

शिक्षा और साहित्यिक वृत्ति में वृद्धि की दृष्टि से यह दशा आपके अनुकूल होगी।

**अंतर्दशा :- शनि - शनि  
( 05/06/2030 - 08/06/2033 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/06/2030 को प्रारंभ होकर 05/06/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 05/06/2030 को प्रारंभ होकर 08/06/2033 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3, 7, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति में गिरावट आ सकती है। वातरोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। अधिकारीगण अप्रसन्न रह सकते हैं। आलस्य की भावना अधिक हो सकती है; जिम्मेदारियों से बचने की कोशिश कर सकते हैं। कार्यों में प्रगति धीमी रहेगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें:

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शिवजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली चपाती गाय को दें।